PD-427 CV-19
(414) M.A. HINDI (FOURTH SEMESTER)
Examination JUNE- 2021
Compulsory/Optional
Group -
Paper - II

Name/Title of Paper- CHHAYAVADOTTAR KAVYA
Time:- Three Hours **Maximum Marks- 080**
Minimum Passing Marks-029

नोटः दोनों खण्डों से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित है।
Note: Answer From Both the Section as Directed. The Figures in the right-hand margin indicate marks.

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर दीजिएः– **1x10=10**

1. अज्ञेय के किन्हीं दो प्रसिद्ध उपन्यासों के नाम लिखिए।
2. अज्ञेय की प्रसिद्ध लंबी कविता का नाम बताइये।
3. मुक्तिबोध जी का पूरा नाम क्या है?
4. मुक्तिबोध की कविताएँ सर्वप्रथम किस संकलन में प्रकाशित हुई?
5. मुक्तिबोध के प्रसिद्ध काव्य संकलन का नाम बताइये?
6. मुक्तिबोध का जन्म कब हुआ?
7. नागार्जुन का पूरा नाम क्या है?
8. मुक्तिबोध किस विचारधारा से जुड़े हुए थे?
9. दुष्यंत कुमार का जन्म कब और कहाँ हुआ?
10. दुष्यंत के लोकप्रिय नाट्य–काव्य का नाम लिखिये?
11. श्रीकांत वर्मा का जन्म किस शहर में हुआ?
12. रघुवीर सहाय की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना कौन सी है?
13. धूमिल का पूरा नाम लिखिए?
14. 'साये में धूप' का प्रकाशन वर्ष बताइये?
15. धर्मवीर भारती के उपन्यासों के नाम लिखिए?

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिएः– **2x5=10**

1. प्रयोगवाद
2. छायावादोत्तर काव्य
3. अज्ञेय का काव्य शिल्प
4. मुक्ति बोध की बिम्ब योजना
5. श्रीकांत वर्मा का कृतित्व
6. भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में व्यंगय
7. धर्मवीर भारती के जीवन वृत्त का परिचय
8. धूमिल की रचनाओं का परिचय
9. नयी कविता
10. दुष्यंत के काव्य विकास परिचय

प्रश्न 3. अज्ञेय जी के काव्य में संवेदना एवं शिल्प की विवेचना कीजिए? **15**

अथवा

नयी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कीजिए?

प्रश्न 4. मुक्तिबोध के काव्य विकास पर एक साहित्यिक निबंध लिखिए? **15**

अथवा

'अंधेरे में' कविता का विस्तृत विश्लेषण मूल्यांकन कीजिए?

प्रश्न 5. नागार्जुन के काव्य की विशेषताएँ लिखिए? **09**

अथवा

प्रगतिवाद या प्रयोगवाद की विशेषताएँ लिखिए?

प्रश्न 6. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:–

(क) 07

किंतु हम है द्वीप।
हम धारा नही हैं।
स्थिर समर्पण है हमारा, हम सदा से द्वीप है स्त्रोत स्विनी के
किंतु हम बहते नही हैं, क्योंकि बहना रेत होना है।
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।
पैर उखड़ेगे, प्लवन होगा, ढहेंगे। सहेंगे। बह जायेंगे।
और फिर हम चूर्ण होकर भी कभी क्या धार बन सकते?
रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगै
अनुपयोगी ही बनायेंगे।

अथवा

यह वीणा जो स्वयं एक जीवन भर की साधना रही?
भूल गया था केशकम्बली राज सभा को!
कम्बल पर अभिमन्त्रित एक अकेलेपन में डूब गया था
जिसमें साक्षी के आगे था
जीवित वही किरीटी तरू
जिसकी जड़ वासुकि के फण पर थी आधारित,
जिसके कन्धों पर बादल सोते थे
और कान में जिसके हिमगिरि कहते थे अपने रहस्य।
संबोधित कर उस तरू को करता था
नीख एकालाप प्रियंवद।

(ख) 07

अंधेरे के ओर–छोर टटोल–टटोल कर
बढ़ता हूँ आगे
पैरों से महसूस करता हूँ, धरती का फैलाव
हाथों से महसूस करता हूँ, दुनियाँ,
मस्तक अनुभव करता है आकाश,
दिल से तड़पता है अंधेरे का अंदाज
आँखें ये तथ्य को सूँघती सी लगती,
केवल शक्ति है स्पर्श की गहरी।

अथवा

जिसमें सोता है अखंड
ब्रह्मा का मौन
अशेष प्रभामय।
अचल धवलगिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है
छोटे–छोटे मोती जैसे उनके शीतल तुहिन कणों को
मन सरोवर के उन सविर्णम कमलों पर गिरते देखा है।

(ग) 07

बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक।
धन्य–धन्य वह धन्य वह शासन की बंदूक।।
सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक।
जहाँ–जहाँ दगने लगी शासन की बंदूक।।
जली ठूंठ पर बैठकर गयी कोकिला कूक।
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक।।

अथवा

वह रहस्यमय व्यक्ति
अब तक न पायी मेरी अभिव्यक्ति है
पूर्ण आस्था वह
निज सम्भावनाओं, निहित प्रभावों प्रतिभाओं की
मेरे परिपूर्ण का आविभवि
हृदय में रिस रहे
आत्म की प्रतिमा